पानी की कहानी

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» पर्यायवाची और विलोम शब्द

प्रश्न 1 (आसान). “श्वेत” का विलोम क्या होगा?

उत्तर – “श्याम”

प्रश्न 2 (आसान). “दिन” के विलोम का शब्द लिखो।

उत्तर – रात

प्रश्न 3 (मध्यम). “सूर्य” के पर्यायवाची शब्द लिखो।

उत्तर – रवि, भानु, दिनकर

प्रश्न 4 (कठिन). निम्न में कौन-से पर्यायवाची हैं: चंद्रमा, इंदु, राका, सूर्य?

उत्तर – चंद्रमा, इंदु, राका – पर्यायवाची; सूर्य पर्यायवाची नहीं है

» ओस की बूँद का चमत्कारिक अनुभव और संवाद

प्रश्न 5 (आसान). कहानी में कथावाचक कौन है?

उत्तर – वही लेखक/वाचक जो अनुभव करता है और बूँद की आवाज़ सुनता है।

प्रश्न 6 (आसान). ओस की बूँद संवाद शुरू कैसे करती है?

उत्तर – ‘फ्सुनो, सुनो’ कहकर।

प्रश्न 7 (मध्यम). ‘फ्मैं ओस हूँ’ कहने से क्या समझ आता है?

उत्तर – बूँद खुद को ‘ओस’ बताकर अपना परिचय दे रही है, यानी वह बोल रही है।

प्रश्न 8 (कठिन). लेखक शुरू में क्यों भ्रमित होता है, और फिर उसे क्या समझ आता है?

उत्तर – क्योंकि झंकार जैसी आवाज़ आसपास सुनाई देती है, पहले लगता है कोई बजा रहा होगा। फिर लेखक को अनुभव होता है कि स्वर उसकी हथेली से ही निकल रहा है और बूँद के कण उसे यह आवाज़ देते हैं।

» पेड़ की जड़ों से पानी का खिंचाव: भूमि में प्रवेश

प्रश्न 9 (आसान). पेड़ की जड़ों पर पानी खींचने में मदद करने वाले ‘बाल जैसे’ हिस्से को क्या कहते हैं?

उत्तर – ‘रोएँ’ (root hairs)

प्रश्न 10 (आसान). खिंचाव का मतलब क्या है?

उत्तर – खींचने वाली ताकत/बल

प्रश्न 11 (मध्यम). मिट्टी के अंदर पानी को जड़ तक पहुँचने में मुश्किल क्यों होती है?

उत्तर – मिट्टी में हवा, सूखी परत और छोटे-छोटे कण/रास्ते होते हैं, इसलिए पानी को छोटे रास्तों से गुजरना पड़ता है।

प्रश्न 12 (कठिन). अगर जड़ों के ‘रोएँ’ न हों, तो पेड़ मिट्टी का पानी कैसे कम/धीरे ले पाएगा? कहानी की अवधारणा से बताओ।

उत्तर – क्योंकि रोएँ पानी को पकड़ने/खींचने वाले मुख्य हिस्से हैं; उनके न होने पर पानी का खिंचाव और पकड़ कमजोर हो जाती है, इसलिए पानी जड़ तक धीरे-धीरे या कम मात्रा में जाएगा।

» सूर्य-ऊर्जा और जल की अवस्थाएँ: भाप से बूँद तक

प्रश्न 13 (आसान). पानी को भाप बनने के लिए किस चीज़ की जरूरत होती है?
उत्तर – सूर्य की गर्मी/ऊर्जा की जरूरत होती है।

प्रश्न 14 (आसान). भाप हवा में किस तरह रहती है?
उत्तर – भाप हवा में फैलकर/ऊपर उठकर तैरती है।

प्रश्न 15 (मध्यम). ठंडक मिलने पर भाप का क्या होता है? एक-दो शब्दों में बताओ।
उत्तर – भाप ठंडी होकर छोटे कणों में बदलती है और बूँदें बन सकती हैं।

प्रश्न 16 (कठिन). कई बच्चे कहते हैं 'भाप बन गई तो पानी खत्म हो गया'। इस बात का सही कारण क्या है?
उत्तर – पानी खत्म नहीं होता; भाप पानी का ही गैस-रूप है। तापमान बदलने पर वही पानी फिर तरल/bूँद के रूप में लौट सकता है।

» जलचक्र का क्रम: समुद्र, वर्षा/धाराएँ, वाष्प-आकाश, पृथ्वी वापसी

प्रश्न 17 (आसान). जलचक्र में 'समुद्र' के बाद अगला चरण क्या होता है?
उत्तर – वाष्प-आकाश (पानी भाप बनकर ऊपर उठता है)

प्रश्न 18 (आसान). वर्षा के बाद पानी आम तौर पर कहाँ-कहाँ बहता है?
उत्तर – धाराओं/नालियों/नदियों में

प्रश्न 19 (मध्यम). बताओ: बादल बनने के लिए किस चरण से शुरू होकर कौन-सा चरण आता है?
उत्तर – समुद्र (पानी गर्म) वाष्प-आकाश भाप की ठंडक से बादल बनना

प्रश्न 20 (कठिन). जलचक्र 'चक्र' इसलिए कहा जाता है कि पानी किस काम के बाद दोबारा शुरुआती जगह पर लौटता है?
उत्तर – वर्षा/धाराएँ और पृथ्वी में वापसी के बाद पानी फिर से समुद्र तक लौटता है, इसलिए चक्र पूरा होता है।

» आत्मकथात्मक शैली और लेखन-अनुप्रयोग

प्रश्न 21 (आसान). "मैं" बनकर बर्फ के एक टुकड़े की एक लाइन लिखो जिसमें उसकी शुरुआत हो।
उत्तर – मैं फ्रिज के अंदर जमी हुई बर्फ का टुकड़ा था, तभी किसी ने दरवाज़ा खोला और मेरी यात्रा शुरू हुई।

प्रश्न 22 (आसान). आत्मकथात्मक शैली की पहचान बताओ–'मैं' की भूमिका क्या है?
उत्तर – जिस वस्तु/पदार्थ की कहानी है, वही 'मैं' बनकर अपने अनुभव खुद बताता है।

प्रश्न 23 (मध्यम). 'मैं एक कागज़ की नाव'–अपनी यात्रा का क्रम (3 घटनाएँ) लिखो: कहाँ से, कैसे, और अंत क्या।
उत्तर – मैं टेबल के किनारे से पानी में गिरती हूँ, फिर बहकर नाले तक जाती हूँ, और अंत में कीचड़/कंट के पास फँसकर धीरे-धीरे घुल जाती हूँ।

प्रश्न 24 (कठिन). एक कहानी लिखो (8-10 लाइनें): 'मैं धुआँ हूँ'। इसमें कम से कम एक कठिनाई (जैसे दीवार/हवा/ठंड) और एक भावना (घबराहट/आश्चर्य/राहत) शामिल करो।
उत्तर – मैं धुआँ हूँ, चूल्हे की आग से निकलकर ऊपर उठना चाहता था। पर एक बार मैंने ऐसा मोड़ लिया कि हवा मेरी दिशा नहीं दे रही थी–थोड़ी घबराहट हुई।
मैं दीवारों और छत के बीच फँस-सा गया, लगा अब मैं फैल नहीं पाऊँगा।
तभी एक खुली खिड़की की हवा मिली–और मुझे लगा जैसे साँस फिर से मिल गई।
मैं आस-पास तितर-बितर हुआ, सब जगह हल्की-सी परछाईं बन गया।
कुछ देर बाद ठंड बढ़ी तो मैं भारी-भारी सा होने लगा।
फिर भी मैंने अपना काम पूरा कर दिया–मैं जगह-जगह पहुँच गया और गायब हो गया।
पूरी कहानी में 'मैं' बोलता रहा, लेखक बस श्रोता रहा।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. दिए गए शब्दों में से पर्यायवाची और विलोम पहचानो: चंद्रमा, शशि, इंदु, राका, दिन, रात, शीत, उष्ण

› सबसे पहले ऐसे शब्द चुनो जिनका अर्थ एक ही हो–चंद्रमा के साथ जो अर्थ समान हो।

› जाँचो: शशि, इंदु, राका–ये चंद्रमा के अलग नाम हैं, यानी पर्यायवाची।

› अब ऐसे शब्द ढूँढो जिनके अर्थ उल्टे हों–दिन और रात एक-दूसरे के विपरीत हैं।

› शीत और उष्ण भी विपरीत हैं, यानी विलोम।

उत्तर – पर्यायवाची: चंद्रमा = शशि, इंदु, राका

विलोम: दिन रात, शीत उष्ण

उदाहरण 2. कहानी में कथावाचक का रोल क्या है, और ओस की बूँद ‘संवाद’ कैसे शुरू करती है? 2-2 बिंदुओं में लिखो।

› कथावाचक/लेखक की भूमिका पहचानो: वह सुनता और समझता है

› बूँद के संवाद की शुरुआत वाली पंक्ति पहचानो: ‘फ्सुनो, सुनो’

› बूँद का परिचय वाली पंक्ति पहचानो: ‘फ्मैं ओस हूँ’

› दोनों को जोड़कर लिखो कि संवाद कथावाचक के सुनने से आगे बढ़ता है

उत्तर – कथावाचक लेखक है, जो बूँद की आवाज़ ‘सुन’ रहा है और उसे समझने की कोशिश करता है। बूँद ‘फ्सुनो, सुनो’ कहकर संवाद शुरू करती है और फिर ‘फ्मैं ओस हूँ’ कहकर अपना परिचय देती है।

उदाहरण 3. मान लो किसी पौधे की जड़ें मिट्टी में हैं। एक तरफ मिट्टी थोड़ी सूखी है और दूसरी तरफ आसपास नमी है। कहानी की अवधारणा के हिसाब से बताओ: पानी को जड़-रोएँ तक पहुँचने में किस वजह से मदद मिलती है, और फिर पानी के ‘भूमि में प्रवेश’ की प्रक्रिया कैसे समझोगे?

› जमीन में जड़ों के ‘रोएँ’ बाल जैसे होते हैं–यही पानी को पकड़ने का मुख्य भाग है।

› नमी वाले हिस्से की तरफ जड़ों का खिंचाव (pulling force) ज्यादा काम करता है, इसलिए जल-कण जड़-रोएँ की तरफ खिंचते हैं।

› पानी सीधे नहीं जाता; मिट्टी के छोटे-छोटे रास्तों/कणों के बीच से धीरे-धीरे अंदर प्रवेश करता है।

› जैसे ही पानी जड़ के रोएँ के पास पहुँचता है, वो जड़ के अंदर चला जाता है–यही ‘भूमि में प्रवेश’ का अर्थ है।

उत्तर – नमी वाले हिस्से में जड़ों के ‘रोएँ’ खिंचाव पैदा करके पानी के जल-कणों को अपनी तरफ खींचते हैं, और मिट्टी के छोटे-छोटे रास्तों से पानी धीरे-धीरे जड़ तक पहुँचकर जड़ के भीतर प्रवेश कर जाता है।

उदाहरण 4. मान लो गाँव में दोपहर के समय एक खेत में पानी की सिंचाई की गई। सूर्य की गर्मी पड़ती रही। शाम को तापमान कम होने लगा। बताओ पानी का सफर किन अवस्थाओं से होकर जाएगा और अंत में खेत में क्या वापस दिख सकता है?

› दोपहर में सूर्य गर्म करता है, इसलिए खेत का पानी गरम होकर भाप बन जाता है

› भाप हवा में ऊपर उठती है और फैलकर चारों तरफ घूमती है

› शाम को तापमान घटता है, भाप ठंडी होकर वापस पानी के छोटे कण/bूँदों में बदलने लगती है

› इसलिए शाम/रात में नमी के रूप में ओस जैसी बारीक बूँदें या नमियत वापस दिख सकती है

उत्तर – पानी पहले भाप (गरमी से) बनता है, फिर हवा में घूमता है; ठंड के कारण भाप वापस छोटी बूँदों में बदलती है–शाम/रात में नमी/ओस के रूप में कुछ वापस दिख सकता है।

उदाहरण 5. एक दिन समुद्र पर तेज़ धूप पड़ी। उसी दिन बादल बने, बारिश हुई, और फिर पानी नालियों और नदियों से बहकर समुद्र तक लौट आया। जलचक्र का सही क्रम लिखो।

› धूप से समुद्र का पानी गर्म होता है, पानी भाप (वाष्प) बनता है

› भाप ऊपर जाकर आकाश में इकट्ठा होती है, बादल बनते हैं (वाष्प-आकाश)

› बादलों से वर्षा होती है

› वर्षा के पानी की धाराएँ नालियों/नदियों में बहती हैं (वर्षा/धाराएँ)

› पानी जमीन में भी रिसता है और फिर से समुद्र तक लौट आता है (पृथ्वी वापसी)

उत्तर – समुद्र वाष्प-आकाश वर्षा/धाराएँ पृथ्वी वापसी समुद्र

उदाहरण 6. “मैं” बनकर एक बीज की आत्मकथात्मक कहानी लिखो। (कम से कम 8-10 लाइनें) इसमें शुरुआत, यात्रा, कठिनाई/खुशी और अंत शामिल होना चाहिए और लेखक “केवल श्रोता” की तरह रहे।

- नायक तय करो: ‘मैं’ = बीज
- शुरुआत लिखो: मैं कहाँ था (मिट्टी में/थैले में)
- यात्रा बताओ: बारिश/पानी के बाद मैं फूटने लगा और पौधे तक पहुँचा
- कठिनाई जोड़ो: सूखा/संकुचन/धूप की कमी/कड़ेपन की बाधा
- भाव जोड़ो: उत्सुकता, डर, राहत
- अंत लिखो: मैं पौधा बन गया, जीवन शुरू हुआ
- पूरे समय ‘मैं’ के अनुभव लिखो; ‘लेखक ने...’ या ‘हम...’ नहीं जोड़ना

उत्तर – मैं एक बीज था, सूखे-से थैले में दबा हुआ। बारिश की एक बूँद मेरे पास आई तो मुझे लगा जैसे कोई दरवाज़ा खुल रहा है।

मैंने पानी सोखा, अंदर की ताकत जागी, और धीरे-धीरे मेरी परत फटने लगी। पहले तो डर लगा–धूप तेज़ थी, मिट्टी सख्त थी–मुझे लगा मैं टूट जाऊँगा।

पर फिर मिट्टी ने मुझे संभाला, नमी बनी रही, और मेरी जड़ें भीतर की तरफ बढ़ीं।

जब पहली हरी-सी पत्ती दिखाई दी, मेरा पूरा मन खुशी से भर गया।

अब मैं सिर्फ बीज नहीं था–मैं पौधा बन चुका था, हवा में सांस लेने जैसा लग रहा था।

लेखक बस सुनता रहा; मेरी जुबान से ही मेरी यात्रा चलती रही।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- NCERT/Hindi में विलोम-पर्यायवाची अक्सर सीधे शब्दों में पूछे जाते हैं–जोड़ियाँ याद करके लिखना आसान रहता है।
- परीक्षा में कथावाचक (वाचक) और संवाद की शुरुआत वाली पंक्तियाँ लिखना आसान अंक दिलाती है।
- उत्तर में ‘जड़-रोएँ’ और ‘खिंचाव’ शब्द जरूर लिखो।
- जल-चक्र में ‘गर्मीवाष्प/भाप’ और ‘ठंडसंघननबूँद’ लिखना जरूर आता है।
- जलचक्र का क्रम उत्तर में लिखो: समुद्र-आकाश-वर्षा-धाराएँ-पृथ्वी-समुद्र।
- NCERT के लिखित उत्तरों में आत्मकथात्मक “मैं” और ‘लेखक का श्रोता-रूप’ साफ दिखाओ।

एक नज़र में रिवीज़न

› - पर्यायवाची: अर्थ समान, विलोम: अर्थ विपरीत
› सुनोमैं ओस हूँपानी/जल–यही संवाद का क्रम याद रखो।
› - रोएँ खींचते हैं, पानी मिट्टी से अंदर जाता है।
› सूर्य: भाप, ठंड: बूँद
› समुद्र भाप(आकाश) वर्षा/धाराएँ पृथ्वीफिर समुद्र
› - “मैं” बोलो, लेखक श्रोता–यही पहचान